05

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

संपादक
डॉ. शंकर रामभाऊ पजई

सह—संपादक
प्रा. प्रमोद किशनराव घन
डॉ. विजय गणेशराव वाघ

अतिथि संपादक
डॉ. रमेश संभाजी कुरे

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

26) समकालीन हिन्दी कविता में अभिव्यक्त कृषक चेतना
डॉ. संतोष विजय येरावार, देगलूर ||104

27) किसानी समाज हासिए पर 'हलफनामे' के जरिए
डॉ. गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे, जि. लातूर ||108

28) त्रिलोचन के काव्य में किसान चेतना की अभिव्यक्ति
डॉ. शेखर घुंगरवार, नांदेड ||110

29) रामधारी सिंह दिनकर के काव्य में चित्रित किसान जीवन
प्रा. लुटे मारोती भारतराव, नांदेड ||113

30) समकालीन कविता में व्यक्त कृषक जीवन की त्रासदी
प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण, लातूर ||117

31) आधुनिक उपन्यासों में चित्रित किसान की दशा और दिशा
डॉ. शे. रज़िया शहेनाज शे. अब्दुल्ला, बसमतनगर ||121

32) हिंदी उपन्यासों में कृषक चेतना
प्रा.डॉ. हाके एम. आर., जि. परभणी ||124

33) प्रेमचंद : कृषक जीवन कल और आज
डॉ. हणमंत पवार, किल्लारी ||126

34) डॉ. नीरजा माधव के "देनपा तिब्बत की डायरी" उपन्यास में व्यक्त कृषक चेतना ...
प्रा. सोनकाम्बले पद्मानंद पिराजीराव, नांदेड ||132

35) हिंदी की कविता में चित्रित कृषक जीवन
डॉ. अविनाश कासांडे, जि. बीड ||135

36) भारतीय किसान जिवन की त्रासदी (हिंदी उपन्यासों के परिप्रेक्ष में)
प्रा. भेंडेकर एन. एस., गंगाखेड ||137

37) पूस की रात कहानी के बहाने किसान विमर्श
डॉ बालाजी श्रीपती भुरे, जि. लातूर ||141

38) हिंदी काव्य और कृषक जीवन : एक अनुशीलन
प्रा. डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी, लातूर ||144

http://www.printingarea.blogspot.com
www.vidyawarta.com/03

32

हिंदी उपन्यासों में कृषक चेतना

प्रा.डॉ. हाके एम. आर.
सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय गंगाखेड,
जि. परभणी

****

साहित्य मानव जाति का हितैषी है। वह समाज का दर्पण है, जिसमें समाज की हर दशा प्रतिबिंबित होती है। उसका मूल उद्देश्य समाज परिवर्तन है। अत: साहित्यिक समाज असंतुलित आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों का विवरण देते हुए उनमें सुधार की अपेक्षा करता है। प्रेमचंद ने जाना था कि समाज की इन समस्याओं पर स्वराज्य ही एक इलाज है, जिसे सारा देश महसूसकर रहा था: देश को अपनी सारी सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक बिमारियों की एक ही अमोघ औषधि दीख पड रही है और वह स्वराज्य है।[1]

प्रेमचन्द कालीन आर्थिक नीति कृषि प्रधान होने से उसकी छाप प्रेमचंद के साहित्य पर पडी थी। उनके साहित्य को आर्थिक परिप्रेक्ष्य में देखने से तत्कालीन आर्थिक दशा का चित्र सुस्पष्ट होता है, जिसमें जन सामान्य की हालत आर्थिक शोषण और शोषण व्यवस्था के जमींदार, महाजन पूँजीपति उद्योगपति, अंधश्रध्दा, रिवाज, सरकारी अधिकारी आदि विविध कलपूर्जे समाए है।

भारत में जमींदारों की सृष्टि अंग्रजो ने की थी। अंग्रेजों के जमाने में जमींनदारो के द्वारा किसानों का जैसा शोषण हुआ था। जमींनदार किसानों को बेदखल कर सकते थे। चाहे जितनी लगान वसूल कर सकते थे और प्राय:वे किसानों की रसीद नही देते थे। प्रेमाश्रम कर्मभूमि और गोदान में किसानों का इस तरह का आर्थिक शोषण जमींदारों के विविध हतकंडो से हुआ है।

प्रेमाश्रम में ज्ञानशंकर किसानों को पैतृक अधिकारों से वंचित करके और बकाया लगान का दावा करके अपनी आमदनी बढाना चाहता है। कर्मभूमि के जमींदार महंत के यहाँ एक–न–एक त्यौहार लगा रहता है। असामियों को ऐसे अवसरों पर भेंट न्योछावर, पूजा चढावा आदि नामों से दस्तुरी देनी पडती थी। गोदान के रायसाहब बकाया लगान तब माँगते हैं, जब किसान बीज बोने के लिए जाते थे। होरी को कारिन्दो, नोखेराम बकाया लगान के संदर्भ में धमकाना चाहता है। कर्मभूमि के जमींदार महंत के यहाँ एक न एक त्यौहार लगा रहता है। असामियों को ऐसे अवसरोंपर भेंट न्योछावर पूजा चढावा आदि नामोंसे दस्तूरी देनी पडती थी। गोदान के रायसाहब बकाया लगान तब माँगते है, जब किसान बीजबोने के लिए जाते थे। होरी को कारिन्दा, नोखेराम बकाया लगानके संदर्भ में धमकाना चाहता है। प्रेमाश्रम के ज्ञानशंकर भी इजाफा लगान का दावा करते है। उन्होंने गायत्री की रियासत d h t ksव्यवस्था की है, उससे शोषण का नग्न रूप प्रगट होता है। इजाफा लगान से आमदनी सवायी हुई जाती थी। जिस रियासत से दो लाख सालाना भी न निकला था, उससे बिना किसी अडचन के तीन लाख की निकसी होती नजर आती थी।[2]

बलिदान कहानी सिकमी खेत के लगान की समस्या को सम्मुख रखती है। इसमें ओंकारनाथ जमींदार है। विध्वंस के जमींदार उदयभान पांडे से शोषित भुनगी को अपने भाड के साथ स्वयं को मिटाना पडता है । नशा में जमींदार की शान आयी है। प्रेमचन्द ने किसानों के आर्थिक शोषण के लिए कारिन्दा, मुख्तार और चपरासी को भी जमींदार के रूपमें देखा था। इस तर जमींदार के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूपसे किसानों का जो आर्थिक शोषण होता था, उससे सारा धन जमींदारों की जेब में जाता था।

महाजनी आर्थिक शोषण सामन्ती शोषण का ही एक रूप था। प्रेमचंदने किसानों के साथ महाजन, जमींदार के होने वाले सम्बन्धों के आर्थिक परिणामों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया था। गोदान में किसानों के आर्थिक शोषण के लिए सूदखोर महाजन कारण है।

रायसाहब जब पैसे माँगने लगते हैं, तब किसान महाजनों के पास ही दौड पडते हैं। पूस की रात में प्रेमचंद ने मनुष्य के आर्थिक दुःख का चित्रण बडे संयम से किया है। इससे यह कहानी आर्थिक शोषण के विरूध्द एक बुलन्द स्वर बन गयी है। महाजन के शोषण से किसान की यह आर्थिक दुर्दशा अन्याय के विरूध्द विद्रोह को जन्म दे सकती है।

कर्मभूमि की कथा जिस सन १९२९ ई के लगान बन्दी आंदोलन पर आद्धृत है। वह काल तो जबर्दस्त आर्थिक मंदी का था इससे सभी चीजोंकी कीमते गिर जाने से किसानों के लिए लगान अदा करना कठिन था। इस संदर्भ में नन्ददुलारे वाजपेयी लिखते है, गाँवों की हालत बिगडती जा रही थी। गाँववाले किसी प्रकार लगान देनेको तैयार न थे। उनके घरों में खाने तक को अनाज नही था।[३] उपन्यास के किसान आर्थिक दृष्टि से दबे हुए हैं। इस तरह की आर्थिक दशा का चित्र जेल कहानी में मृदुला के द्वारा उतारा गया है। असहयोग आन्दोलन में जब वह जेल जाती है, तब वह जेल में क्षमादेवी से किसानों की हालत बताती है अनाज का भाव दिन–दिन गिरता जा रहा है। पौने दो रूपयें में मनभर गेहूँ आता है। मेरी उम्र ही अभी क्या है, अम्माजी भी कहती है कि अनाज इतना सस्ता कभी नही था।[४]

आर्थिक उत्थान में औद्योगिकरण का महत्व है। परंतु प्रेमचंद उसके पक्षमें नही थे। क्योंकि उन्होंने देखा था कि औद्योगिकरण से जहाँ अर्थ वृध्दी होती है, वहाँ अनीति भी बढती है। ग्राम संस्कृति विनष्ट होती है। इसलिए प्रेमचंद ने औद्योगिकरण को विरोध दर्शाया था। वे औद्योगिकरण से खेती और किसानों के हितको प्राधान्य देते थे। अपने मंतव्य को प्रेमचन्द ने सेवासदन में व्यक्त किया है :–हमारे पूर्वजोंने खेती को सबसे उत्तम कहा है, लेकिन आजकल युरोपकी देखा देखी लोग मिल और मशीनों के पीछे पडे हुए है। मगर देखलेना, ऐसा कोई समय आयेगा कि युरोप वाले स्वयं चेतेंगे और मिलों को खोद खोद कर खेत बनायेंगे। स्वाधीन कृषक के सामने मिल के मजदूरों की क्या हस्ती जिन देशों में जीवन ऐसे उलटे नियमों पर चलाया जाता है, वह हमारे लिए आदर्श नही बन सकते।[५]

प्रेमचन्द का कहना है कि खाने की वस्तुओं का उत्पादन होनेसे लोग भूखों नही मरेंगे और यही आदर्श उनके सामने था। जिस औद्योगिकता में लोगों की दशा गुलमोंसी होती है, उसे रायसाहब मानते नहीं है हमारे किसानों की आर्थिक दशा चाहे कितनी ही बुरी क्योंन हो, पर वह किसी के गुलाम नही है।[६]

गोदान में इससे ग्राम व्यवस्था अस्तव्यस्त होती है और होरी तथा गोबर किसान से मजदूर बन जाते है। इस तरहकी औद्योगिक व्यवस्था में जीवन मूल्यों का बलिदान हो जाता है। इस संघर्षमय क्षेत्र में असंतुष्ट मजदुर हडताल की स्कीमे बनाते है, तो मिल मालिक भी परिस्थिति को पहचान कर हडताल होने में अपना हित समझते है। प्रेमचन्द को आर्थिक विषमता मान्य नही थी। ऐसी आर्थिक व्यवस्था को उन्होंने नष्ट करना चाहा था। उनके कर्मभूमि, गोदान उपन्यासों के रईस, जमींदार, महाजन गरीब किसानों को लूटकर मोटे हुए हैं । परंतु जन सामान्य अर्थभाव से रोटी के लिए मुँहताज होते हैं। कफन कहानी में आर्थिक विषमता यथार्थ रूपसे झलकती है। एक और घीसू, माधव का चमार का कुनबा है, तो दूसरी ओर धनिक ठाकुर है। इस प्रकार की आर्थिक शोषण व्यवस्था विषयक प्रेमचन्द पंडित जवाहरलाल नेहरू की आर्थिक धारणा का हवाला देते हुए यह लिखते है अमीर–गरीबों को चूस कर ही अमीर बनता है। वह लोग जो जवाहरलालजी की इस नीति से चौंक उठे हैं, नित्य गरीबों को कुचले जाते देखते हैं, पर उन्हें कभी यह बात नहीं खटकती।[७]

प्रेमचंद चाहते थे कि जमींदार के बने रहने की कोई आवश्यकता नही है। सहयोग से धन और भूमि का वितरण होने से किसानों को नवजीवन मिलेगा इसके लिए अहिंसात्मक मार्ग में उनका विश्वास था।

समाज आर्थिक विपन्नता से इतना ग्रस लिया था कि उसे समय पर खाने भर को नही मिलता था। लोगों को रहने के लिए झोपडे मयस्सर नही थे। प्रजा भूखी रहे, पर अधिकारियों को दस–दस हजार तक वेतन मिले, यह सरकार की नीति समाज के शोषण के लिए कारण थी। सन १९२९ ई. की विश्व–व्यापक आर्थिक मन्दी ने तो किसान समाज को पूरी तरहसे

निर्जीव बना दिया था और लोग अपनी आवश्यकताएँ पूरी करने में असमर्थ थे। इस तरह ओला, सूखा, महामारी और भूकंप जैसी प्राकृतिक आकस्मिक आपत्तियों से समाज जीवन डावाडोल हुआ था।

प्रेमचन्द का समाज शोषित समाज था। देशी और विदेशी लोगों से गरीब जनताका शोषण हो रहा था। अंग्रेजोंने सारा सोना लुटकर भारत को निर्धन बनाया था। सरकार जनता से कर वसूल करने में कोई कसर नही करती थी। दूसरी ओर महाजन, जमींदार पुँजिपति, साहुकार, सरकारी अधिकारी किसानों और मजदूरों का शोषण करते थे। प्रेमाश्रम, कर्मभूमि, गोदान के जमींदार किसानों का शोषण होनेसे उनका सामाजिक स्तर गिरता जाता है। रिश्वत में बडी शक्ति होती है, जिससे बडे से बडे अधिकारी पराभूत होते है और अपराधियों की ओर ताकते भी नही है। समाज को ठगाने का यह मार्ग बन्द होना चाहिए। यह प्रेमचन्द की मान्यता थी।

संदर्भ –

१. प्रेमचन्द साहित्य में दलित चेतना – डॉ. बलवंत साधू जाधव पृ.१३६
२. वही पृ.१३७
३. वही पृ.१४१
४. वही पृ.१४१
५. वही पृ.१४२
६. वही पृ.१४२
७. वही पृ.१४७

❑❑❑

33

प्रेमचंद : कृषक जीवन कल और आज

डॉ. हणमंत पवार
सहयोगी प्राध्यापक तथा अध्यक्ष हिंदी विभाग,
शहीद भगतसिंग महाविद्यालय किल्लारी

****

प्रेमचंद हिंदी भाषा और साहित्य के ही नहीं बल्कि संपूर्ण भारतीय साहित्यिक परंपरा के एक श्रेष्ठ कालजयी रचनाकार। जिन्हें उनके चले जाने के अस्सी वर्ष बाद भी जानने की इच्छा साहित्य के अध्येताओं को ही नहीं, बल्कि यहाँ के सामान्य संवेदनशील पाठक के मन में आज भी जारी है। प्रेमचंद भारतीय उपमहाद्वीप के आधुनिक युग के उर्दू एवं हिंदी साहित्य के महान लेखक। जिन्होंने अपने कथा साहित्य के माध यम से यहाँ के जन सामान्य व्यक्ति को वाणी देने का सफल प्रयास किया। प्रेमचंद पूर्व हिंदी कथा साहित्य कल्पना के महल तैयार करते हुए मनोरंजन की दुनिया में सैर कर रहा था उस साहित्य को वास्तविकता के साथ जोडकर यहाँ के दलित पीडित शोषित, किसान मजदूर, नारी यद्यपि निम्न–मध्य वर्ग की संवेदनाओं को प्रस्तुत किया।

प्रेमचंद एक ऐसे रचनाकार जिन्होंने साहित्य, समाज, राजनीति, धार्मिक आदि भारतीय क्षेत्रों में ऐसे क्रांति के बीज बोए है जिनका आज वटवृक्ष हो चुका है इसी कारण उन्हें आज भी बार–बार पढने की जरूरत महसूस हो रही है। वैसे तो किसी रचनाकार को इतने वर्षों बाद क्यों पढने की जरुरत महसूस हो रही है, जिनपर इतना बोला, लिखा, कहा जा चुका है। फिर भी उनके साहित्य के साथ संवाद की संभावनाएँ समाप्त नहीं होती जा रही है बल्कि और अधिक प्रगल्भता गंभीरता के साथ उसे जानने की तीव्र प्रकटता निर्माण हो रही है, उनकी प्रासंगिकता या आज के